

चैनल

- राशिफल
- ज्योतिष संस्था *नया*
- ज्योतिष सामग्री *नया*
- परामर्श
- पंचांग
- बायोरेडमिक चार्ट
- व्यापारिक भविष्यवाणी
- पर्व एवं त्योहार
- फ्री डाउनलोड
- मंत्र
- चिकित्सा व ज्योतिष
- फ्यूचर समाचार
- पुस्तकें
- सेवाएं
- ज्योतिष डायरेक्ट्री
- ज्योतिष शिक्षा
- ऑन लाइन प्रश्न
- अध्यात्म
- सेमिनार
- ईपंडित नैटवर्क
- तीर्थयात्रा
- शोध लेख

साइट ढूँढिए


आपका फैसला

क्या मंगल दोष वैवाहिक जीवन को प्रभावित करता है?

- ☐ हाँ
- ☐ नहीं
- ☐ पता नहीं

 वोट

[पिछले माह के परिणाम](#)

मुख्य द्वार की दिशा

पं. गोपाल शर्मा (बी. ई.)

भवन निर्माण के समय प्रायः यह प्रश्न सामने आता है कि भवन का मुख्य द्वार किस दिशा/भाग में हो? चारदीवारी में द्वार किस दिशा/भाग में रखा जाए? हम जानते हैं कि पृथ्वी का उत्तर-दक्षिण चुंबकीय क्षेत्र हम पर निरंतर प्रभाव डालता है। नव ग्रहों से निकलने वाली तरंगें हम पांच तत्वों से बने मुनष्यों पर निरंतर प्रभाव डालती हैं। प्रत्येक भूखंड में वास्तुदेव का वास है और वास्तुदेव में विभिन्न देवताओं का स्थापत्य है, जो उचित स्थान पर आसन ग्रहण कर आशीर्वादरूपी शुभ प्रभाव डालते हैं।

वास्तु शास्त्रा में मुख्य द्वार स्थापित करने के विभिन्न मत प्रचलित हैं।

नव ग्रह विधि

प्रत्येक भूखंड की प्रत्येक दिशा में नौ ग्रहों के विशिष्ट स्थान हैं। इसी क्रम संख्या के अनुसार प्रत्येक ग्रह भूखंड की चारों दिशाओं में स्थापित हैं।

नीचे के भूखंड के उत्तरी दिशा में प्रत्येक ग्रह का स्थान दर्शाया गया है।

प्रथम भाग सूर्य हेतु, द्वितीय चंद्र हेतु, तृतीय मंगल, चतुर्थ बुध, पंचम बृहस्पति, षष्ठ शुक्र, सप्तम शनि, अष्टम राहु और नवम केतु ग्रह हेतु है।

जिस ग्रह के क्षेत्रा में मुख्य द्वार बनाया जाएगा, उस क्षेत्रा का ग्रह, भवन में रहने वालों पर, अपने स्वभाव अनुरूप, विशेष शुभ-अशुभ प्रभाव डालता है। जैसे,

- सूर्य क्षेत्रा में मुख्य द्वार बनाने से भवन को क्षति पहुंचने का खतरा बना रहता है।
- चंद्र क्षेत्रा में मुख्य द्वार बनाने से भूस्वामी को नुकसान पहुंचता है।
- मंगल क्षेत्रा में मुख्य द्वार होने से भूस्वामी की शत्रुता बढ़ती है और शत्रुओं से कष्ट पहुंचता है।

If you are not able to view the page properly then [Download Hindi Font.](#)

पंजीकृत सदस्य

यूजर आईडी


.पासवर्ड

[पंजीकरण](#) | [संशोधन पासवर्ड भूल गये हैं?](#)

ज्योतिष सामग्री



-  **जोड़िए** हमारी साइट को अपने Favorites में

आज ही खरीदिए

लियो गोल्ड

डेमो कॉपी 250/-



फ्यूचर पॉइंट द्वारा निर्मित लियो गोल्ड, विंडो पर आधारित जन सामान्य के प्रयोग हेतु सुविधापूर्ण ज्योतिषीय सॉफ्टवेयर है।
और

- बुध क्षेत्रा में मुख्य द्वार होने से सुख-समृद्धि बढ़ती है।
- बृहस्पति क्षेत्रा में मुख्य द्वार होने से धन-संपत्ति प्राप्त होती है।
- शुक्र क्षेत्रा में मुख्य द्वार होने से सुख-संपत्ति अखजत होती है।
- शनि क्षेत्रा में मुख्य द्वार होने से नाना प्रकार के कष्ट झेलने पड़ते हैं और बनते काम बिगड़ते हैं।
- राहु क्षेत्रा में मुख्य द्वार होने से जीवन और कार्य क्षेत्रा में असफलताएं मिलती हैं।
- केतु क्षेत्रा में मुख्य द्वार होने से कष्ट और अनिश्चितताएं बनी रहती है।



लियो-पाम की मेमोरी में ज्योतिषीय प्रोग्राम है, जिससे विभिन्न ज्योतिषीय कार्य किये जा सकते हैं [और](#)

चित्र 1

उत्तर									
वायव्य	सड़क								ईशान
	1	2	3	4	5	6	7	8	9
	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	बृहस्प	शुक्र	शनि	राहु	केतु
पश्चिम	मुख्य द्वार हेतु शुभ								पूर्व
नैऋत्य	दक्षिण								आग्नेय

इस वास्तु सि(ंति से भवन में मुख्य द्वार यदि बुध, बृहस्पति या शुक्र स्थान से निकाला जाए, तो यह सुख-समृद्धिकारक होता है।

अन्य ग्रह क्षेत्रों से मुख्य द्वार नहीं निकालना चाहिए।

शुक्र स्थान मुख्य द्वार के लिए अति शुभ है।

देव विधि ,बोधचक्रमूद्ध

वास्तु शास्त्रा के अनुसार भूखंड-भवन के चारों ओर बत्तीस देवताओं का वास है और प्रत्येक दिशा में आठ देवता वास करते हैं, जो क्रम से इस प्रकार हैं :

1.	शिखी	2.	पर्जन्य
3.	जयंत	4.	कुलिशायुध
5.	सूर्य	6.	सत्य
7.	मृश	8.	आकाश

9.	वायु	10.	पूषा
11.	वितथ	12.	बृहक्षत
13.	यम	14.	गंधर्व
15.	भृंगराज	16.	मृग
17.	पितृ	18.	दौवारिक
19.	सुग्रीव	20.	पुष्पदंत
21.	वरुण	22.	असुर
23.	शोण	24.	पाप
25.	रोगहर	26.	अहि
27.	मुख्य	28.	भल्लाट
29.	सोम	30.	भुजंग
31.	अदिति	32.	दिति

दिशा के अनुसार बत्तीस देवताओं के पफल बोधचक्रम में दर्शाये गये हैं।

बोधचक्रम भावार्थ

मुख्य द्वार : पूर्व दिशा :

- शिखी क्षेत्रा में मुख्य द्वार बनाने से अग्नि भय।
- पर्जन्य क्षेत्रा में मुख्य द्वार बनाने से स्त्री लाभ।
- जयंत क्षेत्रा में मुख्य द्वार बनाने से धन लाभ।
- इंद्र क्षेत्रा में मुख्य द्वार बनाने से अत्यधिक क्रोध आना।
- सत्य क्षेत्रा में मुख्य द्वार बनाने से असत्य बोलने की आदत।
- मृश क्षेत्रा में मुख्य द्वार बनाने से क्रूरता।
- आकाश क्षेत्रा में मुख्य द्वार बनाने से चोरी का भय।

मुख्य द्वार : दक्षिण दिशा

- वायु क्षेत्रा में मुख्य द्वार बनाने से दूसरे की दासता।
- पूषा क्षेत्रा में मुख्य द्वार बनाने से परिजनों से कष्ट।

- वितथ क्षेत्रा में मुख्य द्वार बनाने से नीचत्व ।
- बृहक्षत क्षेत्रा में द्वार बनाने से पुत्रा की वृत्ति ।
- यम क्षेत्रा में मुख्य द्वार बनाने से नीच कर्म ।
- गंधर्व क्षेत्रा में मुख्य द्वार बनाने से दारिद्र्य और कृतघ्नता ।
- भृंगराज क्षेत्रा में मुख्य द्वार बनाने से गरिबी, निर्धनता ।
- मृग क्षेत्रा में मुख्य द्वार बनाने से सुतवीर्य नाश ;पुत्रा का पतनद्ध ।

मुख्य द्वार : पश्चिम दिशा

- पितृ क्षेत्रा में मुख्य द्वार बनाने से भूस्वामी की अल्पायु ।
- दौवारिक क्षेत्रा में मुख्य द्वार बनाने से अनावश्यक व्यय में वृद्धि ।
- सुग्रीव क्षेत्रा में मुख्य द्वार बनाने से धन का नाश ।
- पुष्पदंत क्षेत्रा में मुख्य द्वार बनाने से धन वृत्ति ।
- वरुण क्षेत्रा में मुख्य द्वार बनाने से सभी प्रकार के सुख और भोग की प्राप्ति ।
- असुर क्षेत्रा में मुख्य द्वार बनाने से राज भय ।
- शोण क्षेत्रा में मुख्य द्वार बनाने से भूस्वामी नाना प्रकार के रोगों से ग्रसित ।
- पापयक्ष्मा क्षेत्रा में मुख्य द्वार बनाने से पाप संचय ।

मुख्य द्वार : उत्तर दिशा

- रोग क्षेत्रा में मुख्य द्वार बनाने से वध-बंध की आशंका ।
- अहि भाग में मुख्य द्वार बनाने से शत्रुओं का भय ।
- मुख्य क्षेत्रा में मुख्य द्वार बनाने से पुत्रा लाभ ।

- भल्लाट क्षेत्रा में मुख्य द्वार बनाने से लक्ष्मी प्राप्ति ।
- सोम क्षेत्रा में मुख्य द्वारा बनाने से धर्मशीलता ।
- भुजंग क्षेत्रा में मुख्य द्वार बनाने से बहुवैर ।
- अदिति क्षेत्रा में मुख्य द्वार बनाने से स्त्रियों में दुष्टता ।
- दिति क्षेत्रा में मुख्य द्वार बनाने से धन का नाश ।

दिशा ३३		दिशा ३४	
उत्तर	३३	उत्तर	३४
पश्चिम	३४	पश्चिम	३५
दक्षिण	३५	दक्षिण	३६
दक्षिण-पूर्व	३६	दक्षिण-पूर्व	३७
दक्षिण-पश्चिम	३७	दक्षिण-पश्चिम	३८
उत्तर-पूर्व	३८	उत्तर-पूर्व	३९
उत्तर-पश्चिम	३९	उत्तर-पश्चिम	४०
दक्षिण-पूर्व	४०	दक्षिण-पूर्व	४१
दक्षिण-पश्चिम	४१	दक्षिण-पश्चिम	४२
उत्तर-पूर्व	४२	उत्तर-पूर्व	४३
उत्तर-पश्चिम	४३	उत्तर-पश्चिम	४४
दक्षिण-पूर्व	४४	दक्षिण-पूर्व	४५
दक्षिण-पश्चिम	४५	दक्षिण-पश्चिम	४६
उत्तर-पूर्व	४६	उत्तर-पूर्व	४७
उत्तर-पश्चिम	४७	उत्तर-पश्चिम	४८
दक्षिण-पूर्व	४८	दक्षिण-पूर्व	४९
दक्षिण-पश्चिम	४९	दक्षिण-पश्चिम	५०

उपर्युक्त बोधचक्रम् विधि से ज्ञात होता है कि यदि मुख्य द्वार पूर्व में 2, 3,4, पश्चिम में 20, 21 और उत्तर में 27, 28, 29 एवं 30 क्षेत्रों में बनवाएं तो शुभ होता है ।

बोधचक्रम् के अनुसार मुख्य द्वार स्थापन चित्रा 7 में दर्शाया गया है ।

अतः अति शुभ परिणाम के लिए पूर्व दिशा में जयंत ;बहुधनद्ध या इंद्र ;राजप्रियताद्ध में से किसी एक क्षेत्रा में मुख्य द्वार बनावाएं ।

पश्चिम दिशा में पुष्पदंत धन वृद्धि क्षेत्रा में मुख्य द्वार बनवाएं । उत्तर दिशा में मुख्य ;पुत्रा लाभद्ध या भल्लाट लक्ष्मीद्ध क्षेत्रा या सोम धर्मशीलताद्ध क्षेत्रा में मुख्य द्वार बनवाएं ।

मुख्य द्वार के सामने विभिन्न प्रकार के अवरोधों का हानिकारक प्रभाव गृह स्वामी पर पड़ता है, ऐसा शास्त्रों में उल्लेखित है ।

चित्र 3: मुख्य द्वार का मानसिक प्रभाव									
प्रभाव	वृक्ष	खंभा	स्तंभ	मीनार	कुआं	हैड पंप	मंदिर	सीधी गली	मार्ग
वृक्ष									
खंभा									
स्तंभ									
मीनार									
कुआं									
हैड पंप									
मंदिर									
सीधी गली									
मार्ग									

अवरोध	हानिकारक प्रभाव
वृक्ष	संतति के लिए हानिप्रद।
दूसरे भवन का कोना	मानसिक अशांति और चिंता।
खंभा/स्तंभ/मीनार	महिलाओं में दुराचरण और क्लेश।
कुआं या हैड पंप	मानसिक व्याधियां।
मंदिर	प्रगति और विकास में बाधक।
सीधी गली/मार्ग	आयु का ह्रास, दीर्घायु में कमी।
दलदल/कीचड़/गटर	सुख-शांति का नाश।
नालियां	अवांछनीय व्यय।
सीढ़ियां	अशांति और चिंताएं।

FuturePointIndia.com के बारे में | हमको विज्ञापन दें | [आपके विचार](#) | [हमसे मिलिए](#) | [मुखपृष्ठ](#)

© 1998-2002 FuturePointIndia.com (P) Ltd. - All rights reserved - [Disclaimer](#) - [Privacy Policy](#)

[ऊपर](#)

[फ्यूचर पॉइंट द्वारा प्राधिकृत साइट](#)